Sociology

D-II(H) Paper-III

Disluss the main characters of Indian culture?

प्रश्न :- भारतीय संस्कृती की प्रमुख विशेषताओं का वर्णन करें

उत्तर :- मानव सभ्यता के सम्पूर्ण इतिहास में भारतीय एक ऐसी गौरवपूर्ण परम्परा का प्रतीक है जिसमें ज्ञान, कला, विश्वास तथा मानवता के क्षेत्र में सम्पूर्ण विश्व के लिए बहुत कुछ प्रदान किया गया है संसार की अन्य संस्कृतियाँ जहाँ आत्म केन्द्रित बनी रहे वही भारतीय संस्कृती ने समन्वय तथा समायोजन के द्वारा प्रत्येक समूह को अपना विकास करने का अवसर प्रदान किए संभवतः यही कारण है कि संसार की अनेक प्राचीन संस्कृतियाँ जहाँ धीरे-धीरे समाप्त हो गयी वही भारतीय संस्कृती अनेक उतार-चढ़ाव, परिवर्तनों और पुर्ननिर्माण के बाद भी अपने स्वरूप को बहुत हद तक स्थायी बनाये हुए है वैदिक काल से लेकर आज तक भारतीय संस्कृती किसी एक विशेष समूह का धरोहर नही रही बल्कि यह एक ऐसे रूप मे विकसित हुई जिसके अन्तर्गत अनेकता मे एकता का आदर्श निहीत रहा वास्तव मे संस्कृती का तात्पर्य केवल किसी विश्वास अथवा धार्मिक परम्परा से नही होता यह जीवन की एक ऐसी विधी है जो हमारे विचार करने के तरीको, व्यवहारो और सामाजिक संगठन को एक विशेष रूप प्रदान करती है संस्कृती मे सहभागी विशेषताओं का समावेश होता है जिसमें सभ्यता का विकास होता है तथा व्यक्ति को एक विशेष ढंग से अपने व्यक्तित्व का विकास करने का अवसर प्राप्त होता है इसी आधार

Scanned with CamScanner

पर Tylor के शब्दों में संस्कृति वह जटिल सम्पूर्णता है जिसमें ज्ञान, विश्वास, कला, आचार, कानून, प्रथा इसी परम्परा की सभी क्षमताओं और आदतों का समावेश होता रहता है जिन्हें मनुष्य समाज का सदस्य होने के नाते प्राप्त करता है।

उपयुक्त अवधारणाओं के आधार पर भारतीय संस्कृति की कुछ विशेषताओं का उल्लेख किया गया है जो निम्न है

1. धर्म की प्रधानता :- भारतीय संस्कृति की सबसे आधारभूत विशेषता धर्म को प्रधानता कहा जा सकता है भारतीय संस्कृति एक धर्म प्रधान संस्कृति है जिसमें सभी व्यक्तित्व, सामूहिक और सामाजिक क्रियाओं का निर्धारण धर्म के आधार पर किया गया है भारतीय संस्कृति जीवन की एक ऐसी विधी से है जो प्रत्येक व्यक्ति को विभिन्न परिस्थितियों में उनके कर्तव्यों का बोध कराती है धर्म के महत्व को स्पष्ट करने के लिए व्यक्ति द्वारा पाँच यज्ञों को पूरा किया जाना आवश्यक बताया गया है ये यज्ञ है देवयज्ञ, ऋषि यज्ञ, पितृयज्ञ, अतिथी यज्ञ तथा जीव यज्ञ। इसका मतलब यह है कि व्यक्ति जबतक देवताओं, ज्ञानवान ऋषियों, माता-पिता, अतिथियों तथा सामान्य जीवों के प्रति अपने कर्तव्यों का पालन नहीं करता, उसे एक धार्मिक व्यक्ति नहीं कहा जा सकता।

2. आध्यात्मिकता :- आध्यात्मिकता भारतीय संस्कृति की आत्मा कही जाती है यह जीवन की एक ऐसी व्यवस्था है जो व्यक्ति की अपेक्षा समूह को स्वार्थ की अपेक्षा त्याग को और सांसारिक सुख-सुविधाओं की अपेक्षा मानवीय मूल्यों को अधिक महत्व प्रदान करती है आध्यात्मपद का तात्पर्य इच्छाओं के दमन, आत्मा के परिष्कार तथा देव के समुचित विकास से है यह सत्य है कि प्रत्येक व्यक्ति जीवन में सुख और आनन्द पाना चाहता है लेकिन भारतीय संस्कृती में इस बात पर बल दिया गया है कि वास्तविक सुख इन्द्रियों को संतुष्ट करने से नहीं बल्कि उन पर नियंत्रण रखने से पाया जा सकता है.

3. सामूहिकता :- भारतीय संस्कृती की एक प्रमुख विशेषता कहा जा सकता है सामूहिकता एक ऐसा गुण है जो किसी भी क्रिया, व्यवहार अथवा व्यवस्था की व्यक्तिगत दृष्टिकोण से न देखकर सम्पूर्ण समाज के दृष्टिकोण से देखता है व्यक्ति को यह विश्वास दिलाया गया कि उसका सम्पूर्ण जीवन बहुत से देवताओं, ज्ञानीजनों, माता-पिता, अतिथियों और सामान्य प्राणियों का ऋणी है इस ऋण से उऋण होने का एक मात्र तरीका यह है कि हम अपना सब कुछ देवताओं के अधीन समझें, स्वयं भी प्रणाम करें, सन्तान को जन्म देकर उसका पालन-पोषण करें, अतिथियों का सम्मान करें तथा समस्त जीवों की रक्षा करें

4. पुरुषार्थ की भावना :- भारतीय संस्कृती में पुरुषार्थ को एक ऐसी व्यवस्था के रूप में व्यक्त किया गया है जो प्रत्येक व्यक्ति को उसके प्रमुख कर्तव्यों का बोध करा सके पुरुषार्थ के अंतर्गत व्यक्ति के सभी कर्तव्यों को चार प्रमुख भागों में बाँट

Scanned with CamScanner

A

दिया गया इसे धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष कहा जाता है इन सभी पुरुषार्थों मे मोक्ष को जीवन का सबसे बड़ा लक्ष्य माना गया है जबकि धर्म, अर्थ और काम को साधन के रूप मे स्पष्ट किया गया इस प्रकार स्पष्ट होता है कि भारतीय संस्कृती मे व्यक्ति के कर्तव्यों और उनके लक्ष्यों के बीच संतुलन बनाये रखने के लिए पुरुषार्थ की धारणा को महत्वपूर्ण माना गया है।

S.N. Choudhary
L.N.M.U

Scanned with CamScanner